ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे — निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27 अंकः 85 बुलेटिन अवधिः 27–31 अक्टूबर, 2018 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 26 अक्टूबर, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान–नैनीताल				
	27/10/2018	28/10/2018	29/10/2018	30/10/2018	31/10/2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	20	19	19	19	18
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	11	10	10	9	9
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	मध्यम बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	मध्यम बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	80	75	75
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	40	35	35
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	004	004	004	004	004
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (19 – 25 अक्टूबर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 17.2 से 21.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 5.7 से 8.0 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- जिन किसान भाईयों कि धान की फसल कट गई है उसकी मड़ाई करें।
- भण्डारण के लिए धान को काटकर अच्छी प्रकार सुखा लें ताकि उसमें नमी की मात्रा 12–14 प्रतिशत तक आ जाएं।
- धान की फसल में जीवाणु झुलसा रोग की रोकथाम के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 15 ग्राम + कॉपर आक्सीक्लोराइड 500 ग्राम / है0 की दर से छिड़काव करें।

❖ भावर क्षेत्र में, गेहॅू की समय से बुवाई हेतु असिंचित अवस्था में गेहॅू की उन्नतशील किस्मे जैसे–सी 306, पी बी डब्लू 175, पी बी डब्लू 65, पी बी डब्लू 396, पी बी डब्लू 299, पी बी डब्लू 527 की बुवाई अक्टूबर के द्वितीय पखवाड़े में करे।
❖ बुवाई हेतु प्रमाणित बीज का प्रयोग करे। बिना प्रमाणित बीज को बोने से पहले कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम या कार्बोक्सिम या टेबूकोनाजोल 2 डी एस 1.5 ग्राम को प्रति किग्रा बीज दर से प्रयोग करे।
❖ गेहॅू की बुवाई हेतु कतार से कतार की दूरी 22–23 सेमी एवं गहराई 5.0 सेमी रखे।

उद्यानप्रबन्ध:

❖ घाटी क्षेत्रो में, आलू की फसल में मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें।
❖ बन्दगोभी, फूलगोभी, बीन, मूली, शलजम, राई की फसलों में संस्तुत यूरिया का प्रयोग कर गुड़ाई करें।
❖ मध्यम व उॅचे पर्वतीय क्षेत्रो मे, फूलगोभी, बन्दगोभी बीजू फसलों की पौध का प्रतिरोपण करें।
❖ ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में सब्जी मटर की फसल या तो फूल आने की अवस्था में होगी या लगभग फूल आ चुकें होंगे, में गुड़ाई के पश्चात् दो पंक्तियों के बीच में पड़ी खाली जगह में नमी संरक्षण हेतु एक से दो से0मी0 मोटी पलवार पदार्थ की परत बना लें। इससे न केवल सब्जियाँ अच्छी गुणवत्ता वाली होंगी अपितु उत्पादन में भी 20–40 प्रतिशत की वृद्धि होगी। इसी तरह की तकनीक को मूली, गाजर एवं शलजम सब्जियों में भी अपनाएँ।
❖ टमाटर एवं मिर्च की फसल मे जड़ एवं तना संधि सड़न रोग के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडरमा 10 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ो की सिंचाई करें।
❖ शीतोष्ण फल वृक्षों के थालो की सफाई करना प्रारम्भ करें तथा नये बगीचे लगाने के लिए खाके का कार्य प्रारम्भ करें।
❖ सेब, नाशपाती, आड़ू, प्लम इत्यादि फल वृक्षों की गिरी पत्तियों को इकट्ठा करके गढ्ढे मे डाले तथा बीमार एवं रोगग्रसित पत्तियों को जलाकर नष्ट कर दें।

पशुपालनप्रबन्ध:

❖ जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।
❖ प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
❖ पशुओं के लिए हरे चारे में दलहनी चारा सर्वोत्तम आहार है जो पशुओं के जीवन यापन के साथ–साथ उत्पादन में भी सहायक होता है। अतः पशुपालकों से निवेदन है कि पशुओं को स्वस्थ रखने व अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु सर्वोत्तम दलहनी चारा (बरसीम) अवश्य बोयें क्योंकि 5 कि0ग्रा0 बरसीम (हरा चारा), 1 किलो ग्राम सान्द्र आहार के बराबर होता है।
❖ इस महीने पशुओं खासकर भैंसों में प्रसव की दर बढ़ जाती है। अतः जो पशु ग्लामन है उनको अन्य पशुओ से अलग कर थोड़ी मात्रा में कई बार अतिरिक्त पूरक आहार दें अन्यथा उन्हें आफरा (पेट फूलना) की समस्या हो सकती है।
❖ प्रसव के 2 घंटे के भीतर नवजात की अच्छे से सफाई करने के उपरान्त उसको निश्चित रूप से थोड़ी मात्रा (1/2 – 1 कि0ग्रा0) खीस पिला दें।
❖ पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।
❖ जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उस से सही उत्पादन प्राप्त हो सके।

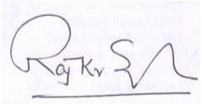

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो. ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर